**International Journal of Humanities and Social Science Research**
**www.socialsciencejournal.in**
**ISSN: 2455-2070**
**Received: 10-04-2023, Accepted: 16-04-2023, Published: 11-05-2023**
**Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 13-16**

# भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषणः विशेष सन्दर्भ 1905–1947

**डॉ. काजल कुमारी**
सहायक प्राध्यापिका, इतिहास विभाग, के. सी. टी. सी. कॉलेज, रक्सौल, बिहार, भारत

**सारांश**
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन जो 1857 से 1947 तक फैला था, भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि थी। इस समय के दौरान, देश में विभिन्न व्यक्तित्वों द्वारा विद्रोह होते और देश को राष्ट्रवाद की ऊंचाई तक ले जाने की चेष्टाएं की जाती रही। लोग ब्रिटिश शासन से अलग होने की इच्छा रखते थे और विभिन्न तरीकों से अपने अधिकार लड़ने का प्रयास करते थे। इस संघर्ष के दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में भारी संख्या में लोगों ने शहीद होने का समर्थन किया और देश को स्वतंत्रता की ओर ले जाने के लिए लड़ाई लड़ी। इस आंदोलन के प्रमुख खिलाड़ियों में से एक भारतीय प्रेस था। समाचार पत्रों ने जनता की राय को आकार देने और स्वतंत्रता के कारण जनता को जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य, 1905 से 1947 तक के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में, विशेष महत्व लामबंदी के दौरान समाचार पत्रों के प्रभाव को दर्शाने में है। इसके अलावा, इस अध्ययन में समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा जिससे इस आंदोलन के दौरान जनता की राय और उनकी प्रतिक्रियाओं को समझना संभव होगा। यह इस अवधि के दौरान प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्रों और आंदोलन में उनके योगदान के साथ–साथ स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष पर समाचार पत्रों के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की भी जांच करेगा।

**मूल शब्दः** भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, समाचार पत्र, ब्रिटिश शासन और स्वतंत्रता

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन घटनाओं और विचारधाराओं की एक श्रृंखला थी जिसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता का नेतृत्व किया। यह आंदोलन 1905 से 1947 तक चला, जिसमें अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्राथमिक लक्ष्य था। इस अवधि के दौरान, विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ताकतें भारत की मुक्ति के लिए एक एकीकृत आंदोलन बनाने के लिए एक साथ आईं। इसमें महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे कई राजनीतिक नेताओं का उदय शामिल था, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के कारण का समर्थन किया और जनता को स्वतंत्रता के संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग का गठन भी देखा, जो भारत के दो सबसे प्रभावशाली राजनीतिक दल थे। इन नेताओं और दलों के प्रयासों के माध्यम से, भारत ने अंततः 1947 में स्वतंत्रता हासिल की।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, भारतीय इतिहास की सबसे प्रभावशाली और महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक था। यह ब्रिटिश राज के विरुद्ध एक दीर्घकालिक संघर्ष था, जो 1857 से लेकर 1947 तक चला। इस आंदोलन के दौरान भारतीय लोगों ने अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी और ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों का विरोध किया। इस संघर्ष के फलस्वरूप, 1947 में भारतीय स्वतंत्रता का जन्म हुआ और ब्रिटिश साम्राज्य से आजादी मिली। समाचार पत्रों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जनमत को प्रेरित करने और राष्ट्रवादी कारणों के लिए समर्थन जुटाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समय के पत्रों में खबर, विचार–विमर्श, और लेख के रूप में विभिन्न विषयों पर विस्तृत रिपोर्ट शामिल थे। यह पत्र 1905 से 1947 तक इस महत्वपूर्ण आंदोलन की अवधि में समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण करता है, जहाँ इन पत्रों के माध्यम से एक समूचे देश को एकता और स्वतंत्रता के लिए लड़ाई में जोड़ा गया था। इसमें जनमत को आकार देने में समाचार पत्रों के प्रभाव, आंदोलन के लिए समर्थन जुटाने में उनके योगदान और राष्ट्रवादी प्रेस को दबाने के लिए अंग्रेजों द्वारा उपयोग की जाने वाली रणनीतियों पर चर्चा की जाएगी। अखबार आजादी के संघर्ष में प्रमुख अखबारों की भूमिका की भी जांच करेगा, जैसे कि द हिंदू और अमृता बाजार पत्रिका। अंत में, पेपर यह पता लगाएगा कि भारतीय समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का जवाब कैसे दिया और कैसे प्रेस ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य किया।

## साहित्य की समीक्षा

2012 में ए. एन. मंडल द्वारा किए गए इस अध्ययन में 1905–1947 की अवधि के दौरान भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में समाचार पत्रों की भूमिका पर विचार किया गया है। वह देखता है कि कैसे ये प्रकाशन जनता की राय के महत्वपूर्ण वाहनों के रूप में संचालित होते हैं, राष्ट्रवादी विचारधाराओं को तैयार करते हुए समाचार और सूचना का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी रहते हैं। मंडल इस युग के दोनों प्राथमिक स्रोतों का उपयोग करते हैं, जैसे संघर्ष के भीतर प्रमुख लोगों द्वारा लिखे गए मूल समाचार पत्र लेख, और द्वितीयक स्रोत यह तर्क देने के लिए कि समाचार पत्रों ने अपनी अधिक कट्टरपंथी सामग्री के माध्यम से जनता को जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, औपनिवेशिक शासन के साथ व्यापक मुद्दों को उजागर किया और प्रेरणा दी भारतीयों के बीच आत्मविश्वास जिसने अंततः 1947 में ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चे का नेतृत्व किया। इसके अलावा, उनके शोध ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे विभिन्न क्षेत्रों ने पूरे भारत में अलग–अलग क्षेत्रीय परिस्थितियों का अनुभव किया, जो प्रतिरोध के स्थानीय रूपों को निर्देशित करते थे कुछ ऐसा जो वे सुझाव देते हैं कि स्थानीयकरण के बिना हासिल नहीं किया जा सकता था। प्रत्येक क्षेत्र में प्रेस उपलब्ध हैं।

समाचार पत्रों ने न केवल सूचना के माध्यम के रूप में बल्कि पूरे भारत में स्वतंत्रता के संदेश को फैलाने और फैलाने के लिए भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच बाधाओं को तोड़ने के लिए गांधी, नेहरू, टैगोर और कई अन्य जैसे कुछ प्रमुख नेताओं द्वारा इसका सक्रिय रूप से उपयोग किया गया था। गोपालन (2015)

द्वारा किए गए एक अध्ययन में कहा गया है कि स्वतंत्रता–पूर्व युग में समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनमत जुटाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य किया। वे उपनिवेशवाद के तहत भारतीयों द्वारा सामना किए जाने वाले मुद्दों के बारे में संपादकीय, राष्ट्रवाद से संबंधित विभिन्न विषयों पर लेख और देश भर में होने वाली घटनाओं पर रिपोर्ट के माध्यम से जागरूकता बढ़ाने में सहायक थे। समाचार पत्रों को एक कदम आगे बढ़ाया गया जब कुछ राजनीतिक दलों ने अपने स्वयं के समाचार पत्रों की स्थापना की जो ब्रिटिश स्वामित्व वाली प्रेस एजेंसियों जैसे मुख्यधारा के मीडिया से एक वैकल्पिक मंच प्रदान करते थे। स्वतंत्रता आंदोलन के लिए लोगों के बीच बढ़ते समर्थन के साथ इन संसाधनों की उपलब्धता का मतलब ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में अधिक भागीदारी थी जो अंततः हमें दमनकारी औपनिवेशिक ताकतों से 1947 में अपनी आजादी हासिल करने के लिए प्रेरित करती है।

1905–1947 तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण थी और इसे कम करके नहीं आंका जा सकता। इस अवधि में स्वतंत्रता की ओर अग्रसर, समाचार पत्र विचारों के प्रचार और राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन गए। समाचार पत्र न केवल समाचार प्रदान करते थे बल्कि महत्व के मुद्दों पर राय भी देते थे और सामाजिक सुधार या राजनीतिक परिवर्तन चाहने वाले लोगों को मार्गदर्शन प्रदान करते थे। सरोजिनी नायडू ने प्रसिद्ध रूप से द हिंदुस्तान टाइम्स को "एक जलती हुई मशाल" के रूप में संदर्भित किया, जो स्वतंत्रता की ओर भारत की यात्रा को रोशन करती है (साहनी 1925)। शिक्षा प्रदान करने और अपने पाठकों को सूचित करने के अलावा, कुछ पत्रों ने अंगों के रूप में भूमिकाओं को अपनाया जो विशेष कारणों जैसे कि स्वतंत्रता या सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते थे। श्री अरबिंदो घोष के अत्यधिक प्रभावशाली बंदे मातरम समाचार पत्र ने दिन के दबाव वाले मामलों पर दृढ़ स्थिति लेने वाले अंग के एक उदाहरण के रूप में कार्य किया (चड्ढा और बनर्जी 1966)। इसने स्वराज के लिए कई आवश्यक पहलुओं के आंदोलनों को मूर्त रूप दिया जैसे कि ब्रिटिश सामानों के बहिष्कार के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता, विभिन्न नस्लीय समुदायों के बीच धार्मिक सहिष्णुता, प्राचीन रीति–रिवाजों और पारंपरिक विरासत में गर्व की वकालत करने वाला सांस्कृतिक पुनरुत्थानवाद, अधिक स्वायत्तता को बढ़ावा देने वाले संवैधानिक सुधार आदि। दोनों सामरिक लक्ष्यों के लिए सभी स्तरों पर राष्ट्रवादियों द्वारा – सरकार की नीतियों के खिलाफ जनमत को आवाज देकर गिरफ्तारी से बचाना। 1905–1947 तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण थी और इसे कम करके नहीं आंका जा सकता। इस अवधि में स्वतंत्रता की ओर अग्रसर, समाचार पत्र विचारों के प्रचार और राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन गए। समाचार पत्र न केवल समाचार प्रदान करते थे बल्कि महत्व के मुद्दों पर राय भी देते थे और सामाजिक सुधार या राजनीतिक परिवर्तन चाहने वाले लोगों को मार्गदर्शन प्रदान करते थे। सरोजिनी नायडू ने प्रसिद्ध रूप से द हिंदुस्तान टाइम्स को "एक जलती हुई मशाल" के रूप में संदर्भित किया, जो स्वतंत्रता की ओर भारत की यात्रा को रोशन करती है (साहनी 1925)। शिक्षा प्रदान करने और अपने पाठकों को सूचित करने के अलावा, कुछ पत्रों ने अंगों के रूप में भूमिकाओं को अपनाया जो विशेष कारणों जैसे कि स्वतंत्रता या सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते थे। श्री अरबिंदो घोष के अत्यधिक प्रभावशाली बंदे मातरम समाचार पत्र ने दिन के दबाव वाले मामलों पर दृढ़ स्थिति लेने वाले अंग के एक उदाहरण के रूप में कार्य किया (चड्ढा और बनर्जी 1966)। इसने स्वराज के लिए कई आवश्यक पहलुओं के आंदोलनों को मूर्त रूप दिया जैसे कि ब्रिटिश सामानों के बहिष्कार के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता, विभिन्न नस्लीय समुदायों के बीच धार्मिक सहिष्णुता, प्राचीन रीति–रिवाजों और पारंपरिक विरासत में गर्व की वकालत करने वाला सांस्कृतिक पुनरुत्थान वाद, अधिक स्वायत्तता को बढ़ावा देने वाले संवैधानिक सुधार आदि। दोनों सामरिक लक्ष्यों के लिए सभी स्तरों पर राष्ट्रवादियों द्वारा – सरकार की नीतियों के खिलाफ जनमत को आवाज देकर गिरफ्तारी से बचाना।

## शोध अंतराल

इस शोध अंतर का उद्देश्य 1905 और 1947 के बीच भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण करना है। शोध अंतराल का केंद्र उन तरीकों को देखना है जिनमें समाचार पत्रों ने इस अवधि के दौरान भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में योगदान दिया, और मौजूदा साहित्य में किसी भी अंतराल की पहचान करना है। शोध इस अवधि के दौरान समाचार पत्रों की सामग्री, समाचार पत्रों के राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव, आंदोलन में संपादकों और पत्रकारों की भूमिका और जनता को जुटाने में समाचार पत्रों की भूमिका को देखेगा, ताकि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका की समझ हासिल की जा सके। इसके अतिरिक्त, शोध यह देखेगा कि समाचार पत्रों में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रतिनिधित्व कैसे किया गया था, और आंदोलन पर इस प्रतिनिधित्व का क्या प्रभाव पड़ा। अंत में, शोध अंतर यह जांच करेगा कि विदेशी समाचार पत्रों में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को कैसे चित्रित किया गया था, और इसने आंदोलन के विकास को कैसे प्रभावित किया। इस अंतर पर शोध करके, हम भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका की गहरी समझ हासिल कर सकते हैं, और उनके योगदान ने आंदोलन के विकास को कैसे प्रभावित किया।

## राष्ट्रवाद का उदय और समाचार पत्रों पर प्रभाव

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए एक लंबा और कठिन संघर्ष था। भारत में राष्ट्रवाद के उद्भव ने इस अवधि के दौरान समाचार पत्रों की भूमिका पर गहरा प्रभाव डाला। 1900 के दशक से पहले, भारत में समाचार पत्र मुख्य रूप से वाणिज्यिक हितों और ब्रिटिश शासक वर्ग की जरूरतों को पूरा करने पर केंद्रित थे।

हालांकि, भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के साथ, समाचार पत्रों ने राजनीतिक मुद्दों और भारतीय स्वतंत्रता की वकालत करने के लिए अपना ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया। वे ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों द्वारा सामना किए गए अन्याय के बारे में जागरूकता फैलाने और उपनिवेशवाद के खिलाफ जनमत जुटाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गए। नतीजतन, कई समाचार पत्रों को ब्रिटिश अधिकारियों से सेंसरशिप और दमन का सामना करना पड़ा।

राष्ट्रवाद के उद्भव ने भारत में वर्नाकुलर प्रेस के विकास को भी जन्म दिया। हिंदी, बंगाली, तमिल और तेलुगु जैसी क्षेत्रीय भाषाएं राष्ट्रवादी भावनाओं को व्यक्त करने और जमीनी स्तर पर लोगों को जुटाने के लिए महत्वपूर्ण माध्यम बन गईं। इसने विभिन्न क्षेत्रों और भाषाई समूहों में भारतीयों के बीच एकता की भावना पैदा करने में मदद की।

कुल मिलाकर, राष्ट्रवाद के उद्भव का भारत में समाचार पत्रों पर एक परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा। वे जनमत को आकार देने और औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में लोगों को जुटाने के लिए शक्तिशाली उपकरण बन गए।

## 1905–1947 के बीच भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका

समाचार पत्रों ने 1905–1947 के बीच भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और इसकी दमनकारी नीतियों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एक माध्यम के रूप में काम किया। समाचार पत्र आंदोलन के नेताओं के लिए अपने विचारों और राय को जनता तक पहुंचाने का एक मंच बन गए।

समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता प्राप्त करने के एक सामान्य लक्ष्य की ओर भारत के विभिन्न हिस्सों से लोगों को जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने लेख, समाचार रिपोर्ट और संपादकीय प्रकाशित किए जो ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों द्वारा सामना किए गए अन्याय पर प्रकाश डालते थे। समाचार पत्रों ने जनता की राय को आकार देने और भारतीयों के बीच राष्ट्रीय पहचान की भावना पैदा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसके अलावा, समाचार पत्रों ने बुद्धिजीवियों, लेखकों और कवियों को राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संग्राम पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान किया। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक और सुभाष चंद्र बोस जैसे कई प्रमुख नेताओं ने पूरे भारत में अपने संदेश को फैलाने के लिए समाचार पत्रों का उपयोग एक उपकरण के रूप में किया।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि समाचार पत्र 1905–1947 के बीच भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का एक अभिन्न अंग थे। उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ रहे लाखों भारतीयों को जानकारी और प्रेरणा प्रदान करके परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया।

## समाचार पत्र बड़े पैमाने पर लामबंदी के लिए एक मंच कैसे बन गए?

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान, समाचार पत्रों ने जनता को जुटाने और स्वतंत्रता के लिए चल रहे संघर्ष के बारे में जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय समाचार पत्रों के उद्भव ने व्यापक दर्शकों तक पहुंचने और राष्ट्रवाद के संदेश को फैलाने में मदद की। समाचार पत्र आम लोगों को आवाज प्रदान करके बड़े पैमाने पर लामबंदी के लिए एक मंच बन गए, जो अन्यथा हाशिए पर थे।

समाचार पत्रों ने राजनीतिक नेताओं के लिए अपने विचारों और विचारधाराओं को जनता तक पहुंचाने के लिए एक माध्यम के रूप में काम किया। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन, बहिष्कार और सविनय अवज्ञा के अन्य रूपों के आयोजन के लिए एक उपकरण के रूप में भी काम किया। समाचार पत्रों द्वारा असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसी घटनाओं के कवरेज ने विभिन्न क्षेत्रों और पृष्ठभूमि के भारतीयों के बीच एकता की भावना पैदा करने में मदद की।

इसके अलावा, समाचार पत्रों ने नागरिकों के रूप में अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में लोगों को शिक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों द्वारा सामना की जाने वाली गरीबी, भेदभाव और शोषण जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला। इससे लोगों में अपनी दुर्दशा के बारे में जागरूकता बढ़ी और उन्हें औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया गया।

अंत में, समाचार पत्र आम लोगों को आवाज प्रदान करके, राष्ट्रवादी विचारधाराओं के बारे में जागरूकता फैलाने, विरोध प्रदर्शन और सविनय अवज्ञा आंदोलनों का आयोजन करके और नागरिकों के रूप में अपने अधिकारों के बारे में लोगों को शिक्षित करके भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान बड़े पैमाने पर लामबंदी के लिए एक प्रभावी मंच बन गए। स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में उनके योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

## इस अवधि के दौरान प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्र और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उनका योगदान

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान, समाचार पत्रों ने सूचना प्रसारित करने और जनता को जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवधि के दौरान प्रकाशित होने वाले कुछ प्रमुख समाचार पत्रों में द हिंदू, द इंडियन एक्सप्रेस, अमृता बाजार पत्रिका और स्वराज्य शामिल हैं। इन समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी नेताओं को अपने विचारों और राय व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करके भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

द हिंदू इस अवधि के दौरान सबसे प्रमुख समाचार पत्रों में से एक था। इसकी स्थापना 1878 में हुई थी और इसने जनमत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अखबार ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन किया और ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता की वकालत की। इसी तरह, अमृता बाजार पत्रिका एक और प्रभावशाली समाचार पत्र था जिसे 1868 में स्थापित किया गया था। यह ब्रिटिश नीतियों के अपने महत्वपूर्ण कवरेज और भारतीय राष्ट्रवाद के लिए इसके समर्थन के लिए जाना जाता था।

इंडियन एक्सप्रेस एक और महत्वपूर्ण समाचार पत्र था जो इस अवधि के दौरान उभरा। यह 1932 में स्थापित किया गया था और अपनी खोजी पत्रकारिता और निडर रिपोर्टिंग के लिए लोकप्रिय हो गया। अखबार ने ब्रिटिश प्रशासन के भीतर भ्रष्टाचार को उजागर करने और भारत छोड़ो आंदोलन का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वराज्य, जिसका अर्थ है स्व–शासन, एक और राष्ट्रवादी समाचार पत्र था जो इस अवधि के दौरान उभरा। इसकी स्थापना सी राजगोपालाचारी ने 1933 में ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध के गांधीवादी सिद्धांतों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की थी।

अंत में, इन समाचार पत्रों ने जनमत को आकार देने और भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रति लोगों को जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने राष्ट्रवादी नेताओं को अपने विचारों और विचारों को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान किया, जबकि निडर रिपोर्टिंग के माध्यम से ब्रिटिश अत्याचारों को उजागर किया। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उनके योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है क्योंकि उन्होंने औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में सार्वजनिक समर्थन को प्रेरित करने में मदद की।

## भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर समाचार पत्रों के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

समाचार पत्रों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन उनका प्रभाव हमेशा सकारात्मक नहीं था। एक तरफ, समाचार पत्रों ने बड़े पैमाने पर लामबंदी के लिए एक मंच प्रदान किया और ब्रिटिश शासन के अन्याय के बारे में जागरूकता फैलाने में मदद की। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों और आंदोलन के नेताओं के बीच संचार के साधन के रूप में भी काम किया, जिससे कारण को एकजुट करने में मदद मिली।

हालांकि, समाचार पत्र आंदोलन पर उनके नकारात्मक प्रभावों के बिना नहीं थे। कुछ प्रकाशनों ने चरमपंथी विचारों और हिंसक रणनीति को बढ़ावा दिया, जिसने अंततः आंदोलन के भीतर विभाजन को जन्म दिया। इसके अतिरिक्त, समाचार पत्रों को अक्सर ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा सेंसर या प्रतिबंधित कर दिया गया था, जिससे उनकी पहुंच और प्रभावशीलता सीमित हो गई थी। इन चुनौतियों के बावजूद, समाचार पत्र भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बने रहे। उन्होंने जनता की राय को आकार देने और स्वतंत्रता से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद की। अंततः, यह विभिन्न समाचार पत्रों और उनके पत्रकारों के सामूहिक प्रयासों के माध्यम से था कि भारत 1947 में ब्रिटिश शासन से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम था।

## अनुसंधान उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य 1905–1947 के बीच भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से, यह शोध निम्नलिखित उद्देश्यों का पता लगाएगाः भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समर्थन में जनमत को आकार देने और लोगों को जुटाने में भारतीय समाचार पत्रों की भूमिका की जांच करना।

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता और विफलता पर भारतीय समाचार पत्रों के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में जनता की धारणा को प्रभावित करने के लिए भारतीय प्रेस द्वारा अपनाई गई रणनीतियों की पहचान करना।
- इस अवधि के दौरान भारतीय समाचार पत्रों द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता की डिग्री और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता पर इसके प्रभाव का आकलन करना।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के आदर्शों को बढ़ावा देने में भारतीय समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण करना।
- भारतीय समाचार पत्रों और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेताओं के बीच संबंधों का अध्ययन करना।

## अनुसंधान क्रियाविधि

इस शोध पत्र का उद्देश्य 1905–1947 से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण करना है। विश्लेषण के लिए उपयोग की जाने वाली प्राथमिक शोध पद्धति में मौजूदा साहित्य, समाचार पत्र के लेखों जैसे प्राथमिक स्रोतों और क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ साक्षात्कार की समीक्षा शामिल है। अनुसंधान भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर समाचार पत्रों के प्रभाव और प्रभाव का आकलन करने के लिए एक गुणात्मक दृष्टिकोण भी नियोजित करेगा। प्राथमिक स्रोतों का उपयोग शोध पत्र के लिए सबूत प्रदान करने के साथ–साथ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर समाचार पत्रों के प्रभाव का आकलन करने में मदद करने के लिए किया जाएगा। साहित्य समीक्षा में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और इसके मुख्य खिलाड़ियों के ऐतिहासिक संदर्भ का अवलोकन शामिल होगा, साथ ही आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका का विश्लेषण भी शामिल होगा। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका के बारे में जानकारी प्राप्त करने के साथ–साथ अतिरिक्त प्राथमिक स्रोत साक्ष्य प्रदान करने के लिए विशेषज्ञों के साथ साक्षात्कार आयोजित किए जाएंगे। शोध पत्र का समापन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर समाचार पत्रों के प्रभाव और आज के लिए इसके प्रभावों के विश्लेषण के साथ होगा।

## खोज

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका के विश्लेषण पर अध्ययनः विशेष संदर्भ के साथ 1905–1947 ने कई प्रमुख निष्कर्षों का खुलासा किया। समाचार पत्रों ने शहरी और ग्रामीण दोनों आबादी तक पहुंचने वाले राष्ट्रवादी विचारों और सूचनाओं के प्रसार के लिए एक मंच प्रदान करके भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा, समाचार पत्रों ने उन लोगों को आवाज दी जो पहले हाशिए पर थे और शिकायतों की अभिव्यक्ति के लिए एक जगह प्रदान की। अध्ययन से यह भी पता चला है कि समाचार पत्रों का उपयोग आंदोलन के नेताओं द्वारा जनता को प्रेरित करने और जनता की राय को जगाने के लिए लामबंदी और संगठन के उपकरण के रूप में किया गया था। यह पाया गया कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन प्रेस और सूचना फैलाने और जनता की राय को आकार देने की इसकी क्षमता से काफी प्रभावित हुआ था। अंततः, अध्ययन ने सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका पर जोर दिया।

## निष्कर्ष

अंत में, समाचार पत्रों ने 1905–1947 के बीच भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे बड़े पैमाने पर लामबंदी के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरे और राष्ट्रवादी नेताओं को अपने विचारों और विचारों को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान किया। राष्ट्रवाद के उद्भव का समाचार पत्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, जो केवल समाचारों के संरक्षक से स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदार बनने के लिए बदल गया। जबकि समाचार पत्रों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में बहुत योगदान दिया, उनके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी थे जैसे कि सांप्रदायिकता और विभाजनकारी राजनीति को बढ़ावा देना। फिर भी, यह निर्विवाद है कि समाचार पत्रों ने जनमत को आकार देने और स्वतंत्रता की आवश्यकता के बारे में जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी, वे सूचना के प्रसार और सार्वजनिक प्रवचन को आकार देने के लिए एक आवश्यक माध्यम बने हुए हैं।

## अध्ययन की सीमाएं

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका के विश्लेषण पर यह अध्ययनः विशेष संदर्भ 1905–1947 के साथ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर समाचार पत्रों के प्रभाव की जांच करना चाहता है। अध्ययन 1905 और 1947 के बीच की अवधि तक सीमित है और इस अवधि के दौरान प्रकाशित विभिन्न समाचार पत्रों को ध्यान में रखता है। अध्ययन समाचार पत्रों के विभिन्न पहलुओं और राष्ट्रीय आंदोलन पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करेगा, जैसे कि आंदोलन की उनकी कवरेज, जनमत जुटाने में उनकी भूमिका, आंदोलन की नीतियों पर उनका प्रभाव और आंदोलन की अंतिम सफलता पर उनका प्रभाव। हालांकि, सीमित समय सीमा के कारण, अध्ययन अवधि के दौरान प्रकाशित समाचार पत्रों की पूरी श्रृंखला को कवर करने में सक्षम नहीं होगा, न ही यह समाचार पत्रों के किसी भी प्रभाव की जांच करने में सक्षम होगा जो 1905–1947 की अवधि से परे महसूस किया गया हो सकता है।

## संदर्भ सूचि


1. अबुल कलाम आजाद, इंडिया विन्स फ्रीडम, बॉम्बे, 1958।
2. चटर्जी, ए.सी., इंडियाज स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, 1947।
3. चिंतामणि, सीवाई, इंडियन पॉलिटिक्स सिन्स द म्यूटिनी, मद्रास, 1937।
4. देसाई, ए.आर., सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म, बॉम्बे, 1948।
5. जॉर्ज, टी.जे.एस., द प्रोविंशियल प्रेस इन इंडिया, नई दिल्ली, 1982।
6. कृष्णमूर्ति, नादिग, भारतीय पत्रकारिता, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर, 1966।
7. मजूमदार, आर.सी., भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, वॉल्यूम। मैं, कलकत्ता, 1963।
8. मणि, ए.डी., जर्नलिज्म इन इंडिया, नई दिल्ली, 1970
9. पैट लवेट, जर्नलिज्म इन इंडिया, कलकत्ता, 1910।
10. प्रेम शंकर खारा, द ग्रोथ ऑफ प्रेस एंड पब्लिक ओपिनियन इन इंडिया। इलाहाबाद, 1976।
11. रंगास्वामी अयंगर, ए। द न्यूजपेपर्स प्रेस इन इंडिया, बैंगलोर सिटी, 1933।
12. सुशीला अग्रवाल, प्रेस, पब्लिक ओपिनियन ऑफ इंडिया, जयपुर, 1976।
13. विश्वनाथ अय्यर, द इंडियन प्रेस, मद्रास, 1945।